3

मात्राएँ
(Signs of Vowels)

स्वरों को दो रूपों में प्रयोग किया जाता है– असली रूप में तथा मात्रा के रूप में।

बच्चो! स्वर को जब व्यंजन के साथ मिलाकर लिखा जाता है, तो स्वरों का रूप बदल जाता है। स्वरों के इस बदले हुए स्वरूप को ही मात्रा कहते हैं।

'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। यह व्यंजन के साथ प्राकृतिक रूप में ही मिला होता है; जैसे–

क् + अ = क च् + अ = च ट् + अ = ट

'अ' के बिना व्यंजन को लिखने के लिए व्यंजन के नीचे टेढ़ी रेखा (्) खींच देते हैं। इस टेढ़ी रेखा को हलंत कहते हैं; जैसे–

क्, ख्, च्, घ्, त्, द्, न्

स्वरों की मात्राएँ

स्वर	मात्राएँ	व्यंजन (स्वर के साथ)	व्यंजन (मात्रा के साथ)	शब्द
अ	—	क् + अ	क	कल, पल, बस, दस
आ	ा	क् + आ	का	कान, पान, दान, मान
इ	ि	क् + इ	कि	किला, विला, किसान, जिला
ई	ी	क् + ई	की	कील, मील, चील
उ	ु	क् + उ	कु	कुल, पुल, बुल, रुपया
ऊ	ू	क् + ऊ	कू	कूप, रूप, धूप, चूहा
ऋ	ृ	क् + ऋ	कृ	कृषि, पृथक, घृत, वृथा
ए	े	क् + ए	के	केला, मेला, ठेला, तेली

ऐ	ै	क् + ऐ	कै	कैसा, वैसा, जैसा, पैसा
ओ	ो	क् + ओ	को	कोयल, बोतल, कोना, रोना
औ	ौ	क् + औ	कौ	कौआ, पौधा, सौदा, हौदा

विशेष

'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ 'र्' के पेट में लगती हैं; जैसे–

र् + उ = रु = रुपया, रुपहला, रुचि आदि।

र् + ऊ = रू = रूप, रूमाल, डमरू आदि।

'अं' को अनुस्वार कहते हैं। इसकी मात्रा (ं) बिंदु वर्ण के ऊपर लगती है; जैसे– कंधा, कंघा, बंदर आदि।

'अः' को विसर्ग कहते हैं। इसकी मात्रा (ः) वर्ण के बाद लगती है; जैसे– नमः, प्रातः, दुःख आदि।

'अँ' को अनुनासिक कहते हैं। इसकी मात्रा (ँ) वर्ण के ऊपर लगती है। उसे चंद्रबिंदु भी कहते हैं; जैसे– साँप, दाँत, पाँच आदि।

आओ दोहराएँ

- स्वरों के बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं।
- 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती है।
- 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ 'र्' के पेट में लगती हैं।

अब बताइए

(क) चित्रों को पहचानकर उनके नाम उचित मात्रा लगाकर पूरे कीजिए–

ग····जर

मल····

पप···त····

ह····थ····

(ख) दी गई मात्राओं से बने दो-दो शब्द लिखिए–

ा	कान	.....	.....
ि	पिता	.....	.....
ी	चील	.....	.....
ु	पुल	.....	.....
ू	सूरज	.....	.....
ृ	घृत	.....	.....
े	केला	.....	.....
ै	पैसा	.....	.....
ो	कोयल	.....	.....
ौ	पौधा	.....	.....
ं	बंदर	.....	.....
ः	नमः	.....	.....
ँ	साँप	.....	.....